पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-10
Hindi
Specimen Copy
April-May
2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अप्रैल-मई	पद्य पाठ-१- साखी	संत कबीर
०२		गद्य पाठ-१०-बड़े भाईसाहब	मुंशी प्रमचंद
०३		संचयन पाठ-१-हरिहर काका	मिथिलेश्वर
		व्याकरण-पद लेखन-अनुच्छेद पत्र–लेखन	

पद्य-पाठ-1 साखी- कबीर

*साखी पाठ सार-

इन साखियों में कबीर ईश्वर प्रेम के महत्त्व को प्रस्तुत कर रहे हैं। पहली साखी में कबीर मीठी भाषा का प्रयोग करने की सलाह देते हैं ताकि दूसरों को सुख और और अपने तन को शीतलता प्राप्त हो। दूसरी साखी में कबीर ईश्वर को मंदिरों और तीर्थों में ढूंढने के बजाये अपने मन में ढूंढने की सलाह देते हैं।तीसरी साखी में कबीर ने अहंकार और ईश्वर को एक दूसरे से विपरीत (उल्टा) बताया है। चौथी साखी में कबीर कहते हैं कि प्रभु को पाने की आशा उनको संसार के लोगो से अलग करती है। पांचवी साखी में कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता, अगर रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है। छठी साखी में कबीर निंदा करने वालों को हमारे स्वभाव परिवर्तन में मुख्य मानते हैं। सातवीं साखी में कबीर ईश्वर प्रेम के अक्षर को पढने वाले व्यक्ति को पंडित बताते हैं और अंतिम साखी में कबीर कहते हैं कि यदि ज्ञान प्राप्त करना है तो मोह- माया का त्याग करना पड़ेगा|

साखी की पाठ व्याख्या

ऐसी बाँणी बोलिये ,मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होइ।।

बाँणी - बोली
आपा - अहम् (अहंकार)
खोइ - त्याग करना
सीतल - शीतल (ठंडा ,अच्छा)
औरन - दूसरों को
होइ –होना

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि 'कबीरदास 'जी है। इसमें कबीर ने मीठी बोली बोलने और दूसरों को दुःख न देने की बात कही है|

व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते है कि हमें अपने मन का अहंकार त्याग कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसमे हमारा अपना तन मन भी सवस्थ रहे और दूसरों को भी कोई कष्ट न हो अर्थात दूसरों को भी सुख प्राप्त हो।

कस्तूरी कुंडली बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि- घटि राँम है , दुनियां देखै नाँहिं।।

कुंडली - नाभि
मृग - हिरण
घटि घटि - कण कण

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इसके कवी कबीरदास जी है इसमें कबीर कहते है कि संसार के लोग कस्तूरी हिरण की तरह हो गए है जिस तरह हिरण कस्तूरी प्राप्ति के लिए इधर उधर भटकता रहता है उसी तरह लोग भी ईश्वर प्राप्ति के लिए भटक रहे है।

व्याख्या कबीरदास जी कहते है कि जिस प्रकार एक हिरण कस्तूरी की खुशबु को जंगल में :- ढूंढता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में विद्यमान होती है परन्तु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण कण में ईश्वर विद्यमान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूंढता है। कबीर जी कहते है कि अगर ईश्वर को ढूंढना ही है तो अपने मन में ढूंढो।

जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नांहि।
सब अँधियारा मिटी गया , जब दीपक देख्या माँहि।।

मैं - अहम् (अहंकार)
हरि - परमेश्वर
अँधियारा – अंधकार

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी मन में अहम् या अहंकार के मिट जाने के बाद मन में परमेश्वर के वास की बात कहते है।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि जब इस हृदय में 'मैं ' अर्थात मेरा अहंकार था तब इसमें परमेश्वर का वास नहीं था परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब परमेश्वर नमक दीपक के दर्शन हुए तो अज्ञान रूपी अहंकार का विनाश हो गया।

सुखिया सब संसार है , खायै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है , जागै अरु रोवै।।

सुखिया - सुखी
अरु - अज्ञान रूपी अंधकार
सोवै - सोये हुए
दुखिया - दुःखी
रोवै - रो रहे

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी है। इसमें कबीर जी अज्ञान रूपी अंधकार में सोये हुए मनुष्यों को देखकर दुःखी हैं और रो रहे है हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि संसार के लोग अज्ञान रूपी अंधकार में डूबे हुए हैं अपनी मृत्यु आदि से भी अनजान सोये हुये हैं। ये सब देख कर कबीर दुखी हैं और वे रो रहे हैं। वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चिंता में जागते रहते हैं।

बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै ,जिवै तो बौरा होइ।।

बिरह - बिछड़ने का गम
भुवंगम -भुजंग , सांप
बौरा - पागल

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गयी है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और अगर रह भी जाता है तो वह पागल हो जाता है।

व्याख्या -: कबीरदास जी कहते हैं कि जब मनुष्य के मन में अपनों के बिछड़ने का गम सांप बन कर लोटने लगता है तो उस पर न कोई मन्त्र असर करता है और न ही कोई दवा असर करतीहै। उसी तरह राम अर्थात ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और यदि वह जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

निंदक नेड़ा राखिये , आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना , निरमल करै सुभाइ।।

निंदक निंदा करने वाला -

नेड़ा – निकट

आँगणि - आँगन

साबण - साबुन

निरमल - साफ़

सुभाइ – स्वभाव

प्रसंग-: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवी कबीदास जी हैं। इसमें कबीरदास जी निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने पास रखने की सलाह देते हैं ताकि आपके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

प्रसंग-: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवी कबीदास जी हैं। इसमें कबीरदास जी निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने पास रखने की सलाह देते हैं ताकि आपके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें हमेशा निंदा करने वाले व्यक्तिओं को अपने निकट रखना चाहिए। हो सके तो अपने आँगन में ही उनके लिए घर बनवा लेना चाहिए अर्थात हमेशा अपने आस पास ही रखना चाहिए। ताकि हम उनके द्वारा बताई गई हमारी गलतिओं को सुधर सकें। इससे हमारा स्वभाव बिना साबुन और पानी की मदद के ही साफ़ हो जायेगा।

पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा , पंडित भया न कोइ।

ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ।

पोथी पुस्तक -

मुवा मरना -

भया बनना -

अषिर अक्षर -

पीव प्रिय -

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी पुस्तक ज्ञान को महत्त्व न देकर ईश्वर - प्रेम को महत्त्व देते हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते है कि इस संसार में मोटी - मोटी पुस्तकें (किताबें) पढ़ कर कई मनुष्य मर गए परन्तु कोई भी मनुष्य पंडित (ज्ञानी) नहीं बन सका। यदि किसी व्यक्ति ने ईश्वर प्रेम का एक भी अक्षर पढ़ लिया होता तो वह पंडित बन जाता अर्थात ईश्वर प्रेम ही एक सच है इसे जानने वाला ही वास्तविक ज्ञानी है।

हम घर जाल्या आपणाँ , लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

जाल्या - जलाया
आपणाँ - अपना
मुराड़ा - जलती हुई लकड़ी , ज्ञान
जालौं - जलाऊं
तास का - उसका

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर मोह - माया रूपी घर को जला कर अर्थात त्याग कर ज्ञान को प्राप्त करने की बात करते हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला दिया है अर्थात उन्होंने मोह - माया रूपी घर को जला कर ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अब उनके हाथों में जलती हुई मशाल (लकड़ी) है यानि ज्ञान है। अब वे उसका घर जलाएंगे जो उनके साथ चलना चाहता है अर्थात उसे भी मोह - माया से मुक्त होना होगा जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

*बहुवैकिल्प्क प्रशोत्तर –

Q1- मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

A)अहंकार रहित मीठे बोल सबके ह्रदय को छूते हैं
B) मिश्री गलती है
C) मिश्री घुलती है
D) मीठे बोल

Q2- साखी शब्द किसका तद्भव रूप है ?

A)साक्षी

B) साखी

C) सखि

D) साक्ष्य

Q3- सखी शब्द किस से बना है ?

A) साक्षी

B) साक्ष्य

C) सखि

D) साखी

Q4- साक्ष्य का क्या अर्थ है ?

A) प्रत्यक्ष ज्ञान

B) साक्ष्य ज्ञान

C) सांसारिक ज्ञान

D) मायावी ज्ञान की

Q5- संत समाज में किस ज्ञान की महत्ता है ?

A) अनुभव ज्ञान की

B) बाहरी ज्ञान की

C) मायावी ज्ञान की

D) सांसारिक ज्ञान

Q6- कबीर की साखियों में किन भाषाओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है ?

A) अवधी

B) राजस्थानी

C) भोजपुरी और पंजाबी

D) सभी

Q7- साखी क्या है ?

A) दोहा छंद

B) पद्य गद्य

C) छंद

D) दोहा

Q8- दोहा छंद के क्या लक्षण हैं ?

A)१३ और ११ के विश्राम से २४ मात्रा

B) १२ और ११ के विश्राम से २४ मात्रा

C) १२ और ११ के विश्राम से २८ मात्रा

D) १३ और ११7के विश्राम से २४ मात्रा

Q9- गुरु शिष्य को तत्त्व ज्ञान की शिक्षा कैसे देता है ?

A)सत्य की साक्षी देता हुआ

B) व्यवहारिक ज्ञान देकर

C) असत्य की साक्षी देता हुआ

D) सत्क्ष देता हुआ

Q10- कबीर का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

A) १३९८ में काशी में

B) १३२१ में बोधगया में

C) १३५४ में उत्तराखंड में

D) १३९५ में काशी में

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

प्रश्न 1 -: मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?

उत्तर -: कबीरदास जी के अनुसार जब आप दूसरों के साथ मीठी भाषा का उपयोग करोगे तो उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। वे सुख का अनुभव करेंगे और जब आपका मन शुद्ध और साफ़ होगा परिणामस्वरूप आपका तन भी शीतल रहेगा।

प्रश्न 2 -: दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के सन्दर्भ में स्पष्ट किजिए।

उत्तर -: तीसरी साखी में कबीर का दीपक से तात्पर्य ईश्वर दर्शन से है तथा अँधियारा से तात्पर्य अज्ञान से है। ईश्वर को सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है अर्थात जब किसी को सर्वोच्च ज्ञान के दर्शन हो जाये तो उसका सारा अज्ञान दूर होना सम्भव है।

प्रश्न 3 -: ईश्वर कण - कण में व्याप्त है , पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर :- कबीरदास जी दूसरी साखी में स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर कण कण में व्याप्त है ,पर हम अपने अज्ञान के कारण उसे नहीं देख पाते क्योंकि हम ईश्वर को अपने मन में खोजने के बजाये मंदिरों और तीर्थों में खोजते हैं।

प्रश्न 4 -: संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतिक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: कबीरदास के अनुसार संसार के वे सभी व्यक्ति जो बिना किसी चिंता के जी रहे हैं वे सुखी हैं तथा जो ईश्वर वियोग में जी रहे हैं वे दुखी हैं। यहाँ 'सोना ' 'अज्ञान ' का और 'जागना ' 'ईश्वर - प्रेम '

का प्रतिक है। इसका प्रयोग यहाँ इसलिए हुआ है क्योंकि कुछ लोग अपने अज्ञान के कारण बिना चिंता के सो रहे हैं और कुछ लोग ईश्वर को पाने की आशा में सोते हुए भी जग रहे हैं।

प्रश्न 5 -: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर -: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्तिओं को अपने आस पास रखने का उपाय सुझाया है। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति जब आपकी गलतियां निकालेगा तो आप उस गलती को सुधार कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते हैं।

प्रश्न 6 -: 'ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' - इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर -: 'ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' - इस पंक्ति में कवि ईश्वर प्रेम को महत्त्व देते हुए कहना चाहता है कि ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही किसी व्यक्ति को पंडित बनाने के लिए काफी है।

प्रश्न 7 -: कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता प्रकट कीजिए।

उत्तर -: कबीर की साखिओं में अनेक भाषाओँ का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उद्धृत साखिओं की भाषा की विशेषता यह है कि इसमें भावना की अनुभूति ,रहस्यवादिता तथा जीवन का संवेदनशील संस्पर्श तथा सहजता को प्रमुख स्थान दिया गया है।

*निम्नलिखित पंक्तिओं के भाव स्पष्ट कीजिये-

(1)' बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ। '

भाव :इस पंक्ति का भाव यह है कि जब किसी मनुष्य के मन में अपनों से बिछड़ने का गम रूपी साँप जगह बना लेता है तो कोई दवा ,कोई मंत्र काम नहीं आते।

(2)' कस्तूरी कुंडलि बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि। '

भाव :इस पंक्ति का भाव यह है कि अज्ञान के कारण कस्तूरी हिरण पूरे वन में कस्तूरी की खुसबू के स्त्रोत को ढूंढता रहता है जबकि वह तो उसी के पास नाभि में विद्यमान होती है।

(3)' जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नहीं। '

भाव :इस पंक्ति का भाव यह है कि अहंकार और ईश्वर एक दूसरे के विपरीत हैं जहाँ अहंकार है वहां ईश्वर नहीं ,जहाँ ईश्वर है वहां अहंकार का वास नहीं होता।

(4)' पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा -, पंडित भया न कोइ।

भाव :इस पंक्ति का भाव यह है कि किताबी ज्ञान किसी को पंडित नहीं बना सकता , पंडित बनने के लिए ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही काफी है। -

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

प्रश्न 1-मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?

उत्तर -कबीरदास जी के अनुसार जब आप दूसरों के साथ मीठी भाषा का उपयोग करोगे तो उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। वे सुख का अनुभव करेंगे और जब आपका मन शुद्ध और साफ़ होगा परिणामस्वरूप आपका तन भी शीतल रहेगा।

प्रश्न 2-दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के सन्दर्भ में स्पष्ट किजिए।

उत्तर-तीसरी साखी में कबीर का दीपक से तात्पर्य ईश्वर दर्शन से है तथा अँधियारा से तात्पर्य अज्ञान से है। ईश्वर को सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है अर्थात जब किसी को सर्वोच्च ज्ञान के दर्शन हो जाये तो उसका सारा अज्ञान दूर होना सम्भव है।

प्रश्न 3-ईश्वर कण - कण में व्याप्त है , पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर-कबीरदास जी दूसरी साखी में स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर कण कण में व्याप्त है ,पर हम अपने अज्ञान के कारण उसे नहीं देख पाते क्योंकि हम ईश्वर को अपने मन में खोजने के बजाये मंदिरों और तीर्थों में खोजते हैं।

प्रश्न 4-संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतिक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कबीरदास के अनुसार संसार के वे सभी व्यक्ति जो बिना किसी चिंता के जी रहे हैं वे सुखी हैं तथा जो ईश्वर वियोग में जी रहे हैं वे दुखी हैं। यहाँ 'सोना ' 'अज्ञान ' का और 'जागना ' ईश्वर-प्रेम ' का प्रतिक है। इसका प्रयोग यहाँ इसलिए हुआ है क्योंकि कुछ लोग अपने अज्ञान के कारण बिना चिंता के सो रहे हैं और कुछ लोग ईश्वर को पाने की आशा में सोते हुए भी जग रहे हैं।

प्रश्न 5-अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर-अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्तिओं को अपने आस पास रखने का उपाय सुझाया है। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति जब आपकी गलतियां निकालेगा तो आप उस गलती को सुधार कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते हैं।

प्रश्न 6-' ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' - इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर-'ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' इस पंक्ति में कवि ईश्वर प्रेम को महत्त्व देते हुए कहना चाहता है कि ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही किसी व्यक्ति को पंडित बनाने के लिए काफी है।

प्रश्न 7-कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता प्रकट कीजिए।

उत्तर-कबीर की साखिओं में अनेक भाषाओँ का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उद्धृत साखिओं की भाषा की विशेषता यह है कि इसमें भावना की अनुभूति ,रहस्यवादिता तथा जीवन का संवेदनशील संस्पर्श तथा सहजता को प्रमुख स्थान दिया गया है।

*-लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.ऐसी बाँणी बोलिये' के माध्यम से कबीर कैसी वाणी बोलने की सीख दे रहे हैं और क्यों?

उत्तर-'ऐसी बाँणी बोलिये' के माध्यम से कबीर मनुष्य को अपने मन का अहंकार या घमंड छोड़कर मधुर वाणी में विनम्रता भरी वाणी बोलने की सीख दे रहे हैं। इसका कारण यह है कि अपने मन का

अहंकार त्यागने से हमारे शरीर को शांति और शीतलता की अनुभूति होगी तथा मधुर वाणी सुनने वालों को सुखानुभूति होती है।

प्रश्न 2.मन में आपा कैसे उत्पन्न होता है? आपा खोने के लिए कबीर क्यों कह रहे हैं?

उत्तर-मनुष्य की इच्छा होती है कि वह सांसारिक सुखों का अधिकाधिक उपयोग करे। इन सुखों की चाहत में वह सुख के नाना प्रकार के साधन एकत्र कर लेना चाहता है। इसके अलावा वह धन और बल का स्वामी भी बनना चाहता है। ऐसे होते ही उसके मन में आपा उत्पन्न हो जाता है। आपा खोने के लिए कबीर इसलिए कह रहे हैं कि इससे मनुष्य-मनुष्य में दूरी बढ़ती है तथा मनुष्य गर्वोक्ति का शिकार हो जाता है|

प्रश्न 3.'ऐसें घटि घटि राँम है' के माध्यम से कबीर ने मनुष्य को किस सत्यता से परिचित किया है?

उत्तर-'ऐसें घटि घटि राँम है' के माध्यम से कबीर ने मनुष्य को उस सत्यता से परिचित कराया है जिससे मनुष्य आजीवन अनजान रहता है। मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए देवालय, तीर्थस्थान, गुफा-कंदराओं जैसे दुर्गम स्थानों पर खोजता-फिरता है और अंततः दुनिया से चला जाता है, परंतु वह ईश्वर को अपने मन में नहीं खोजती जहाँ उसका सच्चा वास है। ईश्वर तो घट-घट पर अर्थात् हर प्राणी में यहाँ तक कि कण-कण में व्याप्त है।

प्रश्न 5.सब अँधियारा मिटि गया' यहाँ किस अँधियारे की ओर संकेत किया गया है? यह अँधियारा कैसे दूर हुआ?

उत्तर-सब अँधियारा मिटि गया' के माध्यम से मनुष्य के मन में समाए अहंकार, अज्ञान, भय जैसे अँधियारे की ओर संकेत किया गया है जिसके कारण मनुष्य सांसारिकता में डूबा था और ईश्वर को नहीं पहचान पाता है। यह अँधियारा प्रकाशपुंज ईश्वर रूपी दीपक को मन में देखा। यह अँधेरा उसी तरह मिट गया जैसे दीपक जलाने से अँधेरा समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 6.कबीर की दृष्टि में संसार सुखी और वह स्वयं दुखी हैं, ऐसा क्यों?

उत्तर-संसार के लोगों को देखकर कबीर को लगता है कि लोग सांसारिक विषय-वासनाओं के साथ खाने- पीने और हँसी-खुशी से जीने में मस्त हैं। ये लोग सुखी हैं। दूसरी ओर कबीर है जो प्रभु प्राप्ति न होने के कारण परेशान है। वह सोने के बजाय जाग रहा है और रोते हुए दुखी हो रहा है।

प्रश्न 7.राम वियोगी की दशा कैसी हो जाती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-राम का वियोग झेल रहे व्यक्ति की दशा दयनीय हो जाती है। कोई मंत्र या उपाय उसे ठीक नहीं कर पाता है। वह इस व्यथा की अधिकता को सह नहीं पाता है और अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है। ऐसा व्यक्ति यदि जीता भी है तो उसकी स्थिति पागलों के समान होती है। वह राम से मिलकर ही स्वस्थ हो सकता है|

प्रश्न 8.निंदक के बारे में कबीर की राय समाज से पूरी तरह भिन्न थी। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-निंदक अर्थात् आलोचकों के बारे में कबीर की राय समाज से बिलकुल भी मेल नहीं खाती थी।

समाज के लोग निंदा के भय से आलोचकों को अपने आसपास फटकने भी नहीं देते हैं। इसके विपरीत कबीर का मत था कि निंदकों को अपने आसपास ही बसने की जगह देना चाहिए। ऐसा करना व्यक्ति के हित में होता है|

*-दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर:

प्रश्न 1.कबीर की साखियाँ जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। इनमें जिन जीवन-मूल्यों की झलक मिलती है, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर-कबीर की साखियाँ कबीर के अनुभव और गहनता से खोजे गए सत्य पर आधारित है। उनकी हर साखी मनुष्य को सीख सी देती प्रतीत होती है। इन साखियों में हमें कई जीवन मूल्यों की झलक मिलती है; जैसे-

-मनुष्य को सदैव ऐसी वाणी बोलना चाहिए जिससे बोलने और सुनने वाले दोनों को ही सुख और शीतलता मिले।

-मनुष्य को अहंकार का त्याग कर देना चाहिए।

-अपने आलोचकों को अपने आसपास ही जगह देना चाहिए ताकि व्यक्ति का स्वभाव परिष्कृत हो सके।
ईश्वर प्राप्ति के लिए मनुष्य को उचित प्रयास करना चाहिए जिसके लिए यह समझना आवश्यक है कि उसका वास घट-घट में है।

प्रश्न 2.ईश्वर के संबंध में कबीर के अनुभवों और मान्यताओं का वर्णन साखियों के आधार पर कीजिए।

उत्तर-ईश्वर के संबंध में कबीर के अनुभव और मान्यताएँ जनमानस की सोच के विपरीत थे। जनमानस का मानना है कि ईश्वर मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, तीर्थ स्थलों या दुर्गम स्थानों पर रहता है। मनुष्य उसकी खोज में यहाँ-वहाँ भटकता हुआ जीवन बिता देता है, परंतु कबीर की मान्यता एवं अनुभव के अनुसार-

-ईश्वर हर प्राणी यहाँ तक कि कण-कण में विद्यमान है।

-ईश्वर की प्राप्ति के लिए अहंकार का त्याग अत्यावश्यक है।

-ईश्वर के वियाग में व्यक्ति जी नहीं सकता है। यदि वह जीता है तो उसकी दशा पागलों जैसी हो जाती है।

-ईश्वर के बारे में जाने बिना कोई ज्ञानी नहीं कहला सकता है।

-ईश्वर को पाने के लिए विषय-वासनाओं और सांसारिकता का त्याग आवश्यक है।

प्रश्न 3.निंदक किसे कहा गया है? वह व्यक्ति के स्वभाव का परिष्करण किस तरह करता है?

उत्तर-कबीर के अनुसार निंदक वह व्यक्ति है जो अपने आसपास रहने वालों की स्वाभाविक कमियों को अनदेखा नहीं करता है। वह उन कमियों की ओर व्यक्ति का ध्यान बार-बार आकर्षित कराता है। उसकी इस आलोचना से व्यक्ति गलतियों और अपनी कमियों के प्रति सजग हो जाता है। वह उन्हें दूर करने या ढंकने का प्रयास करता है और सुधार के लिए उन्मुख हो जाता है। आत्मसुधार की भावना पनपते

ही व्यक्ति धीरे-धीरे अपने दुर्गुणों और कमियों से मुक्ति पा जाता है। ऐसा करने में व्यक्ति को कुछ खर्च भी नहीं करना पड़ता है। इस तरह निंदक अपने आसपास रहने वालों का परिष्करण करता है|

गद्य–पाठ-१-बड़े भाई साहब

लेखक परिचय

लेखक -प्रेमचंद

जन्म -13 जुलाई 1880 (बनारस -लमही गांव (

मृत्यु -8 अक्टूबर 1936

बड़े भाई साहब पाठ सार

प्रस्तुत पाठ में एक बड़े भाई साहब हैं जो हैं तो छोटे ही परन्तु उनसे छोटा भी एक भाई है। वे उससे कुछ ही साल बड़े हैं परन्तु उनसे बड़ी -बड़ी आशाएं की जाती हैं। बड़े होने के कारण वे खुद भी यही चाहते हैं कि वे जो भी करें छोटे भाई के लिए प्रेरणा दायक हो। भाई साहब उससे पाँच साल बड़े हैं, परन्तु तीन ही कक्षा आगे पढ़ते हैं। वे अपनी शिक्षा की नींव मज़बूती से डालना चाहते थे ताकि वे आगे चल कर अच्छा मुकाम हासिल कर सकें। वे हर कक्षा में एक साल की जगह दो साल लगाते थे और कभी -कभी तो तीन साल भी लगा देते थे।वे हर वक्त किताब खोल कर बैठे रहते थे|

लेखक का मन पढ़ाई में बिलकुल भी नहीं लगता था। अगर एक घंटे भी किताब ले कर बैठना पड़ता तो यह उसके लिए किसी पहाड़ को चढ़ने जितना ही मुश्किल काम था। जैसे ही उसे ज़रा सा मौका मिलता वह खेलने के लिए मैदान में पहुँच जाता था। लेकिन जैसे ही खेल ख़त्म कर कमरे में आता तो भाई साहब का वो गुस्से वाला रूप देखा कर उसे बहुत डर लगता था।बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँटते हुए कहते हैं कि वह इतना सुस्त है कि बड़े भाई को देख कर कुछ नहीं सीखता । अगर लेखक अपनी उम्र इसी तरह गवाना चाहता है तो उसे घर चले जाना चाहिए और वहां मजे से गुल्ली-डंडा खेलना चाहिए । कम से कम दादा की मेहनत की कमाई तो ख़राब नहीं होगी|

भाई साहब उपदेश बहुत अच्छा देते थे। ऐसी-ऐसी बाते करते थे जो सीधे दिल में लगती थी लेकिन भाई साहब की डाँट -फटकार का असर एक दो घंटे तक ही रहता था और वह इरादा कर लेता था कि आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा। यही सोच कर जल्दी जल्दी एक समय सारणी बना देता।परन्तु समय सारणी बनाना अलग बात होती है और उसका पालन करना अलग बात होती है। वार्षिक परीक्षा हुई। भाई साहब फेल हो गए और लेखक पास हो गया और लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आया। अब लेखक और भाई साहब के बीच केवल दो साल का ही अंतर रह गया था। इसबात से उसे अपने ऊपर घमण्ड हो गया था और उसके अंदर आत्मसम्मान भी बढ़ गया था। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि वे ये मत सोचो कि वे फेल हो गए हैं, जब वह उनकी कक्षा में आएगा, तब उसे पता चलेगा कि कितनी मेहनत करनी पड़ती है। जब अलजेबरा और जामेट्री करते हुए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और इंग्लिस्तान का इतिहास याद करना पड़ेगा तब उसे पता चलेगा। बादशाहों के नाम याद रखने में ही कितनी परेशानी होती है। परीक्षा में कहा जाता है कि -'समय की पाबंदी' पर निबंध

लिखो, जो चार पन्नों से कम नहीं होना चाहिए।अब आप अपनी कॉपी सामने रख कर अपनी कलम हाथ में लेकर सोच-सोच कर पागल होते रहो। लेखक सोच रहा था कि अगर पास होने पर इतनी बेज्जती हो रही है तो

अगर वह फेल हो गया होता तो पता नहीं भाई साहब क्या करते, शायद उसके प्राण ही ले लेते। लेकिन इतनी बेज्जती होने के बाद भी पुस्तकों के प्रति उसकी कोई रूचि नहीं हुई। खेल-कूद का जो भी अवसर मिलता वह हाथ से नहीं जाने देता। पढ़ता भी था, लेकिन बहुत कम। बस इतना पढ़ता था की कक्षा में बेज़्ज़ती न हो|फिर से सालाना परीक्षा हुई और कुछ ऐसा इतिफाक हुआ कि लेखक फिर से पास हो गया और भाई साहब इस बार फिर फेल हो गए।जब परीक्षा का परिणाम सुनाया गया तो भाई साहब रोने लगे और लेखक भी रोने लगा। अब भाई साहब का स्वभाव कुछ नरम हो गया था। कई बार लेखक को डाँटने का अवसर होने पर भी वे लेखक को नहीं डाँटते थे ,शायद उन्हें खुद ही लग रहा था कि अब उनके पास लेखक को डाँटने का अधिकार नहीं है और अगर है भी तो बहुत कम।

अब लेखक की स्वतंत्रता और भी बड़ गई थी। वह भाई साहब की सहनशीलता का गलत उपयोग कर रहा था। उसके अंदर एक ऐसी धारणा ने जन्म ले लिया था कि वह चाहे पढ़े या न पढ़े, वह तो पास हो ही जायेगा । उसकी किस्मत बहुत अच्छी है इसीलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हो गया। अब लेखक को पतंगबाज़ी का नया शौक हो गया था और अब उसका सारा समय पतंगबाज़ी में ही गुजरता था। फिर भी, वह भाई साहब की इज्जत करता था और उनकी नजरों से छिप कर ही पतंग उडाता था। एक दिन शाम के समय ,हॉस्टल से दूर लेखक एक पतंग को पकड़ने के लिए बिना किसी की परवाह किए दौड़ा जा रहा था|

अचानक भाई साहब से उसका आमना -सामना हुआ, वे शायद बाजार से घर लौट रहे थे। उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े क्रोधित भाव से बोले 'इन बेकार के लड़कों के साथ तुम्हें बेकार के पतंग को पकड़ने के लिए दौड़ते हुए शर्म नहीं आती ? तुम्हे इसका भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि अब तुम छोटी कक्षा में नहीं हो ,बल्कि अब तुम आठवीं कक्षा में हो गए हो और मुझसे सिर्फ एक कक्षा पीछे पढ़ते हो। आखिर आदमी को थोड़ा तो अपनी पदवी के बारे में सोचना चाहिए। समझ किताबें पढ़ लेने से नहीं आती, बल्कि दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि यह घमंड जो अपने दिल में पाल रखा है कि बिना पढ़े भी पास हो सकते हो और उन्हें लेखक को डाँटने और समझने का कोई अधिकार नहीं रहा, इसे निकाल डालो। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रस्ते पर नहीं जा सकता। बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं कि अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी।लेखक भाई साहब की इस समझाने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज लेखक को सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लिए उसके मन में इज़्ज़त और भी बड़ गई। लेखक ने उनके प्रश्नो का उत्तर

नम आँखों से दिया कि भाई साहब जो कुछ कह रहे है वो बिलकुल सही है और उनको ये सब कहने का अधिकार भी है।भाई साहब ने लेखक को गले लगा दिया और कहा कि वे लेखक को पतंग उड़ाने से मना नहीं करते हैं। उनका भी मन करता है कि वे भी पतंग उड़ाएँ। लेकिन अगर वे ही सही रास्ते से भटक जायेंगें तो लेखक की रक्षा कैसे करेंगे ? बड़ा भाई होने के नाते यह भी तो उनका ही कर्तव्य है|

इतिफाक से उस समय एक कटी हुई पतंग लेखक के ऊपर से गुज़री। उसकी डोर कटी हुई थी और लटक रही थी। लड़कों का एक झुण्ड उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। भाई साहब लम्बे तो थे ही, उन्होंने उछाल कर डोर पकड़ ली और बिना सोचे समझे हॉस्टल की और दौड़े और लेखक भी उनके पीछे - पीछे दौड़ रहा था|

*बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- प्रेम चन्द जी ने साहित्य का नाता किस से जोडा ?

स्वयं से

B) अपने जन्म स्थान से

C) किसी से नही

D) जन जीवन से

Q2- प्रेम चन्द जी जीवन भर किस से जूझते रहे ?

A)स्वयं से

B) लोगो से

C) फ़िल्मकारो से

D) आर्थिक तङ्गी से

Q3- बडे भाई साहिब उनकी अन्य रचनाओ से किस दृष्टि से उच्च कोटि की रचना है ?

A) भाषा शेली की

B) साहित्य की

C) कहानी की

D) शब्दों के चयन की

Q4- वे मुम्बई मे पटकथा लेखक के रूप मे ज्यादा देर तक कार्य क्यो नही कर पाये ?

A) फ़िल्म निर्माताओ के निर्देश के अनुसार लिखने के कारण

B) घर से दूर होने कारण |

C) रुचि न होने के कारण

D) समय न होने के कारण

Q5- बडे भाई साहिब कहानी किस शैली मे लिखी गयी है ?

A)व्यंग्यात्मक

B) करुणामयी

C) आत्म कथात्मक

D) सभी

Q6- प्रेम जी का शरीर जर्जर क्यो हो गया ?

A)निरन्तर विकट परिस्तिथियो का सामना करने के कारण

B) पानी के कारण

C) आर्थिक तन्गी के कारण

D) सभी

Q7- प्रेम जी प्रमुख रूप से क्या थे ?

A) कथाकार

B) लेखक

C) गायक

D) कहानीकार

Q8- प्रेम जी ने किस वर्ग को विस्तारपूर्वक वर्णित किया है ?

A)शोषक एवं शोषित

B) फ़िल्मी वर्ग को

C) आम जनता को

D) सभी

Q9- इस कहानी मे किन शब्दो का सुन्दर मिश्रण है ?

A)तत्सम

B) तदभव

C) देशज एवं विदेशी

D) सभी

Q10- प्रेम जी ने लगभग कितनी कहानियां लिखी ?

A) 200

B) 300

C) 400

D) लगभग 100

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25 -30) शब्दों में दीजिए -:

प्रश्न 1 -: छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम टेबल बनाते समय क्या क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

प्रश्न 2 -: एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर :-एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी प्रतिक्रिया बहुत भयानक थी। वह बहुत गुस्से में थे। उन्होंने छोटे भाई को डांटते हुए कहा कि प्रथम दर्जे में पास होने का उसे घमण्ड हो गया है और घमण्ड के कारण रावण जैसे भूमण्डल के स्वामी का भी नाश हो गया था तो हम तो फिर भी साधारण इंसान हैं। बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को गुल्ली -डंडा खेलने के बजाये पढ़ाई में ध्यान देने की नसीहत दी |

प्रश्न 3 : बड़े भाई साहब को अपने मन की बात क्यों दबानी पड़ती थी?

उत्तर:बड़े भाई साहब और छोटे भाई की उम्र में पांच साल का अंतर था। वे माता पिता से दूर हॉस्टल में रहते थे। बड़े भाई साहब का भी मन खेलने ,पतंग उड़ाने और तमाशे देखने का करता था परन्तु वे सोचते थे की अगर वो बड़े होकर मनमानी करेंगे तो छोटे भाई को गलत रास्ते पर जाने से कैसे रोकेंगे। बड़े भाई साहब छोटे भाई का ध्यान रखना अपना कर्तव्य मानते थे इसीलिए उन्हें अपनी इच्छाए दबनी पड़ती थी|

प्रश्न 4 -: बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों **?**

उत्तर- बड़े भाई साहब चाहते थे कि छोटा भाई खेल -कूद में ज्यादा ध्यान न देकर पढ़ाई में ध्यान दे। वे छोटे भाई को हमेशा सलाह देते थे कि अंग्रेजी में ज्यादा ध्यान दो ,अंग्रेजी पढ़ना हर किसी के बस की बात नहीं है। अगर पढ़ाई में ध्यान नहीं दोगे तो उसी कक्षा में रह जाओगे। इसलिए बड़े भाई साहब छोटे को खेलकूद से ध्यान हटाने की सलाह देते थे|

प्रश्न 5 -: छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया ?

उत्तर-:छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का अनुचित लाभ उठाया। उसपर बड़े भाई का डर कम हो गया। भाई के डर से जो थोड़ी बहुत पढाई करता था वह भी बंद कर दी थी क्योंकि छोटे भाई को लगता था कि वह पढ़े या ना पढ़े पास हो ही जायेगा। वह अपना सारा समय मौज मस्ती और खेल के मैदान में बिताने लगा था।

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 -60 शब्दों में लिखिए-

प्रश्न 1 -: बड़े भाई की डाँट फटकार अगर ना मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता ?अपने विचार प्रकट कीजिए|

उत्तर -: बड़े भाई साहब को अपनी जिम्मेदारिओं का आभास था वे जानते थे कि अगर वह अनुशासन हीनता करेंगे तो छोटे भाई को गलत रास्ते पर जाने से नहीं रोक पाएंगे। छोटा भाई जब भी खेल कूद में ज्यादा समय लगाता तो बड़े भाई साहब उसे डाँट लगाते और पढ़ाई में ध्यान लगाने को कहते। यह बड़े भाई का ही डर था कि छोटा भाई थोड़ा बहुत पढ़ लेता था। अगर बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँट फटकार नहीं लगते तो छोटा भाई कभी कक्षा में अव्वल नहीं आता।

प्रश्न 2 -: बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचारो से सहमत है ?

उत्तर :-बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के तौर तरीकों पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि ये शिक्षा अंग्रेजी बोलने ,पढ़ने पर जोर देती है चाहे किसी को अंग्रेजी पढ़ने में रूचि है या नहीं। अपने देश के इतिहास के साथ साथ दूसरे देशों के इतिहास को भी पढ़ना पढ़ता है जो बिलकुल भी जरुरी नहीं है। यहाँ पर रटने वाली प्रणाली पर जोर दिया जाता है। बच्चों को कोई विषय समझ में आये या ना आये रट कर परीक्षा में पास हो ही जाते हैं। छोटे -छोटे विषयों पर लम्बे -लम्बे निबंध लिखने होते हैं। ऐसी शिक्षा प्रणाली जो लाभदायक कम और बोझ ज्यादा लगे ठीक नहीं है|

प्रश्न 3 -: बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उत्तर :-बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती। बल्कि जीवन के अनुभवों से आती है। इसके लिए उन्होंने अपनी अम्मा ,दादा और हेडमास्टर की माँ के उदाहरण भी दिए है। उनका कहना है कि हम इतने पढ़े होने के बाद भी अगर बीमार भी पड़ जाते है तो परेशान हो जाते हैं लेकिन हमारे माँ दादा बिना पढ़े भी हर मुसीबत का सामना बड़ी आसानी से करते है इसमें केवल इतना ही फर्क है कि उनके पास हमसे ज्यादा जीवन का अनुभव है। बड़े भाई के अनुसार अनुभव ही समझ दिलाता है।

प्रश्न 4 -: छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर :-एक दिन शाम के समय ,हॉस्टल से दूर जब छोटा भाई एक पतंग को पकड़ने के लिए बिना किसी की परवाह किये दौड़ा जा रहा था, अचानक भाई साहब से उसका आमना -सामना हुआ।उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े क्रोधित भाव से बोले 'लेखक भले ही बहुत प्रतिभावान है ,इसमें कोई शक नहीं हैं ,लेकिन जो प्रतिभा किसी को शर्म लिहाज़ न सिखाये वो किस काम की।बड़े भाई साहब कहते हैं कि लेखक भले ही अपने मन में सोचता होगा कि वह उनसे सिर्फ एक ही कक्षा पीछे रह गया है और अब उन्हें लेखक को डाँटने या कुछ कहने का कोई हक नहीं है ,लेकिन ये सोचना लेखक की गलती है।बड़े भाई साहब उससे पांच साल बड़े हैं और हमेशा ही रहेंगे । समझ किताबें पढ़ लेने से नहीं आती ,बल्कि दुनिया देखने से आती है।बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि यह घमंड जो उसने दिल मेंपाल रखा है कि वह बिना पड़े भी पास हो सकता है और भाई साहब को उसे डाँटने और समझने का कोई अधिकार नहीं रहा ,इसे निकल डाले। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रस्ते पर नहीं जा सकता।बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं कि अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी।छोटा भाई ,भाई साहब की इस समझने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज उसे सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लिए उसके मन में इज़्ज़त और भी बड़ गई|

प्रश्न 5 -: बड़े भाई साहब की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :- बड़े भाई साहब अध्ययनशील थे। हमेशा किताबे खोल कर बैठे रहते थे। दिन रात कठिन परिश्रम करते थे। चाहे उन्हें समझ में आये या ना आये, वे फिर भी एक -एक अक्षर को रट लिया करते थे। अपने बड़े होने का उन्हें एहसास है ,इसलिए वे छोटे भाई को तरह तरह से समझते हैं। अपने कर्तव्य के लिए वे अपनी बहुत सी इच्छाओं को दबा देते थे। छोटे भाई को किताबी ज्ञान से हट कर अनुभव के महत्त्व को समझते थे और कहते थे की उनके रहते वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चल पायेगा।

प्रश्न 6 -: बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्पूर्ण कहा है?

उत्तर बड़े भाई साहब ने जिंदगी :-के अनुभव और किताबी ज्ञान में से जिंदगी के अनुभव को महत्पूर्ण कहा है। उन्होंने पाठ में कई उदाहरणों से ये स्पष्ट किया है। अम्मा और दादा का उदाहरण और हेडमास्टर का उदाहरण दे कर बड़े भाई साहब कहते है कि चाहे कितनी भी बड़ी डिग्री क्यों न हो जिंदगी के अनुभव के आगे बेकार है। जिंदगी की कठिन परिस्थितियों का सामना अनुभव के आधार पर सरलता से किया जा सकता है|

संचयन-पाठ-१-हरिहर काका

लेखक परिचय

लेखक - मिथिलेश्वर
जन्म - 1950

हरिहर काका पाठ सार-

लेखक कहता है कि वह हरिहर काका के साथ बहुत गहरे से जुड़ा था। लेखक का हरिहर काका के प्रति जो प्यार था वह लेखक का उनके व्यावहार के और उनके विचारों के कारण था और उसके दो कारण थे। पहला कारण था कि हरिहर काका लेखक के पड़ोसी थे और दूसरा कारण लेखक को उनकी माँ ने बताया था कि हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। जब लेखक व्यस्क हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी। लेखक के गाँव की पूर्व दिशा में ठाकुर जी का विशाल मंदिर था, जिसे गाँव के लोग ठाकुरबारी यानि देवस्थान कहते थे। लोग ठाकुर जी से पुत्र की मन्नत मांगते, मुक़दमे में जीत, लड़की की शादी किसी अच्छे घर में हो जाए, लड़के को नौकरी मिल जाए आदि मन्नत माँगते थे। मन्नत पूरी होने पर लोग अपनी ख़ुशी से ठाकुरजी को रूपए, ज़ेवर, और अनाज चढ़ाया करते थे। जिसको बहुत अधिक ख़ुशी होती थी वह अपने खेत का छोटा-सा भाग ठाकुरजी के नाम कर देता था और यह एक तरह से प्रथा ही बन गई। लेखक कहता है कि उसका गाँव अब गाँव के नाम से नहीं बल्कि देव-स्थान की वजह से ही पहचाना जाता था। उसके गाँव का यह देव स्थान उस इलाके का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध देवस्थान था। हरिहर काका ने अपनी परिस्थितिओं के कारण देव-स्थान में जाना बंद कर दिया था। मन बहलाने के लिए लेखक भी कभी-कभी देव-स्थान चला जाता था। लेकिन लेखक कहता है कि वहाँ के साधु-संत उसे बिलकुल भी पसंद नहीं थे। क्योंकि वे काम करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते थे। भगवान को भोग लगाने के नाम पर वे दिन के दोनों समय हलवा करवाते थे। वे खुद अगर कोई काम करते थे तो वो था बातें बनवाने का काम। लेखक हरिहर काका के बारे में बताता हुआ कहता है कि हरिहर काका और उनके तीन भाई हैं। सबकी शादी हो चुकी है। हरिहर काका के अतिरिक्त सभी तीन भाइयों के बाल-बच्चे हैं। कुछ समय तक तो हरिहर काका की सभी चीज़ों का अच्छे से ध्यान रखा गया, परन्तु फिर कुछ दिनों बाद हरिहर काका को कोई पूछने वाला नहीं था। लेखक कहता है कि अगर कभी हरिहर काका के शरीर की स्थिति ठीक नहीं होती तो हरिहर काका पर मुसीबतों का पहाड़ ही गिर जाता। क्योंकि इतने बड़े परिवार के रहते हुए भी हरिहर काका को कोई पानी भी नहीं पूछता था। बारामदे के कमरे में पड़े हुए हरिहर सब्ज़ियाँ, बजके, चटनी, रायता और भी बहुत कुछ बना था। सब लोगों ने खाना खा लिया और हरिहर काका को कोई पूछने तक नहीं आया। हरिहर काका गुस्से में बरामदे की ओर चल पड़े और जोर-जोर से बोल रहे थे कि

उनके भाई की पत्नियाँ क्या यह सोचती हैं कि वे उन्हें मुफ्त में खाना खिला रही हैं। उनके खेत में उगने वाला अनाज भी इसी घर में आता है।

हरिहर काका के गुस्से का महंत जी ने लाभ उठाने की सोची। महंत जी हरिहर काका को अपने साथ देव-स्थान ले आए और हरिहर काका को समझाने लगे की उनके भाई का परिवार केवल उनकी जमीन के कारण उनसे जुड़ा हुआ है, किसी दिन अगर हरिहर काका यह कह दें कि वे अपने खेत किसी और के नाम लिख रहे हैं, तो वे लोग तो उनसे बात करना भी बंद कर देंगें। खून के रिश्ते ख़त्म हो जायेंगे। महंत हरिहर काका से कहता है कि उनके हिस्से में जितने खेत हैं वे उनको भगवान के नाम लिख दें। ऐसा करने से उन्हें सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी।सुबह होते ही हरिहर काका के तीनों भाई देव-स्थान पहुँच गए। तीनों हरिहर काका के पाँव में गिर कर रोने लगे और अपनी पत्नियों की गलती की माफ़ी माँगने लगे और कहने लगे की वे अपनी पत्नियों को उनके साथ किए गए इस तरह के व्यवहार की सज़ा देंगे। हरिहर काका के मन में दया का भाव जाग गया और वे फिर से घर वापिस लौट कर आ गए। जब अपने भाइयों के समझाने के बाद हरिहर काका घर वापिस आए तो घर में और घर वालों के व्यवहार में आए बदलाव को

काका को अगर किसी चीज़ की जरुरत होती तो उन्हें खुद ही उठना पड़ता। एक दिन उनका भतीजा शहर से अपने एक दोस्त को घर ले आया । उन्हीं के आने की ख़ुशी में दो-तीन तरह की देख कर बहुत खुश हो गए। घर के सभी छोटे-बड़े सभी लोग हरिहर काका का आदर-सत्कार करने लगे।

गाँव के लोग जब भी कहीं बैठते तो बातों का ऐसा सिलसिला चलता जिसका कोई अंत नहीं था। हर जगह बस उन्हीं की बातें होती थी। कुछ लोग कहते कि हरिहर काका को अपनी जमीन भगवान के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उत्तम और अच्छा कुछ नहीं हो सकता। इससे हरिहर काका को कभी न ख़त्म होने वाली प्रसिद्धि प्राप्त होगी। इसके विपरीत कुछ लोगों की यह मानते|

थे कि भाई का परिवार भी तो अपना ही परिवार होता है। अपनी जायदाद उन्हें न देना उनके साथ अन्याय करना होगा। हरिहर काका के भाई उनसे प्रार्थना करने लगे कि वे अपने हिस्से की जमीन को उनके नाम लिखवा दें। इस विषय पर हरिहर काका ने बहुत सोचा और अंत में इस परिणाम पर पहुंचे कि अपने जीते-जी अपनी जायदाद का स्वामी किसी और को बनाना ठीक नहीं होगा। फिर चाहे वह अपना भाई हो या मंदिर का महंत। क्योंकि उन्हें अपने गाँव और इलाके के वे कुछ लोग याद आए, जिन्होंने अपनी जिंदगी में ही अपनी जायदाद को अपने रिश्तेदारों या किसी और के नाम लिखवा दिया था। उनका जीवन बाद में किसी कुत्ते की तरह हो गया था, उन्हें कोई पूछने वाला भी नहीं था। हरिहर काका बिलकुल भी पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु उन्हें अपने जीवन में एकदम हुए बदलाव को समझने में कोई गलती नहीं हुई और उन्होंने फैसला कर लिया कि वे जीते-जी किसी को भी अपनी जमीन नहीं लिखेंगे।

लेखक कहता है कि जैसे-जैसे समय बीत रहा था महंत जी की परेशानियाँ बढ़ती जा रही थी। उन्हें लग रहा था कि उन्होंने हरिहर काका को फसाँने के लिए जो जाल फेंका था, हरिहर काका उससे बाहर

निकल गए हैं, यह बात महंत जी को सहन नहीं हो रही थी। आधी रात के आस-पास देव-स्थान के साधु-संत और उनके कुछ साथी भाला, गंड़ासा और बंदूकों के साथ अचानक ही हरिहर काका के आँगन में आ गए। इससे पहले हरिहर काका के भाई कुछ सोचें और किसी को अपनी सहायता के लिए आवाज लगा कर बुलाएँ, तब तक बहुत देर हो गई थी। हमला करने वाले हरिहर काका को अपनी पीठ पर डाल कर कही गायब हो गए थे।वे हरिहर काका को देव-स्थान ले गए थे। एक ओर तो देव-स्थान के अंदर जबरदस्ती हरिहर काका के अँगूठे का निशान लेने और पकड़कर समझाने का काम चल रहा था, तो वहीं दूसरी ओर हरिहर काका के तीनों भाई सुबह होने से पहले ही पुलिस की जीप को लेकर देव-स्थान पर पहुँच गए थे।महंत और उनके साथियों ने हरिहर काका को कमरे में हाथ और पाँव बाँध कर रखा था और साथ ही साथ उनके मुँह में कपड़ा ठूँसा गया था ताकि वे आवाज़ न कर सकें। परन्तु हरिहर काका दरवाज़े तक लुढ़कते हुए आ गए थे और दरवाज़े पर अपने पैरों से धक्का लगा रहे थे ताकि बाहर खड़े उनके भाई और पुलिस उन्हें बचा सकें।

दरवाज़ा खोल कर हरिहर काका को बंधन से मुक्त किया गया। हरिहर काका ने पुलिस को बताया कि वे लोग उन्हें उस कमरे में इस तरह बाँध कर कही गुप्त दरवाज़े से भाग गए हैं और उन्होंने कुछ खली और कुछ लिखे हुए कागजों पर हरिहर काका के अँगूठे के निशान जबरदस्ती लिए हैं।

यह सब बीत जाने के बाद हरिहर काका फिर से अपने भाइयों के परिवार के साथ रहने लग गए थे। चौबीसों घंटे पहरे दिए जाने लगे थे। यहाँ तक कि अगर हरिहर काका को किसी काम के कारण गाँव में जाना पड़ता तो हथियारों के साथ चार-पाँच लोग हमेशा ही उनके साथ रहने लगे।लेखक कहता है कि हरिहर काका के साथ जो कुछ भी हुआ था उससे हरिहर काका एक सीधे-सादे और भोले किसान की तुलना में चालाक और बुद्धिमान हो गए थे। उन्हें अब सब कुछ समझ में आने लगा था कि उनके भाइयों का अचानक से उनके प्रति जो व्यवहार परिवर्तन हो गया था, उनके लिए जो आदर-सम्मान और सुरक्षा वे प्रदान कर रहे थे, वह उनका कोई सगे भाइयों का प्यार नहीं था बल्कि वे सब कुछ उनकी धन-दौलत के कारण कर रहे हैं, नहीं तो वे हरिहर काका को पूछते तक नहीं। जब से हरिहर काका देव-स्थान से वापिस घर आए थे, उसी दिन से ही हरिहर काका के भाई और उनके दूसरे नाते-रिश्तेदार सभी यही सोचरहे थे कि हरिहर काका को क़ानूनी तरीके से उनकी जायदाद को उनके भतीजों के नाम कर देना चाहिए। क्योंकि जब तक हरिहर काका ऐसा नहीं करेंगे तब तक महंत की तेज़ नज़र उन पर टिकी रहेगी। जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को समझातेसमझाते थक गए-, तो उन्होंने हरिहर काका को डाँटना और उन पर दवाब डालना शुरू कर दिया। एक रात हरिहर काका के भाइयों ने भी उसी तरह का व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसा महंत और उनके सहयोगियों ने किया था। उन्हें धमकाते हुए कह रहे थे कि ख़ुशीजहाँ जरुरत है-ख़ुशी कागज़ पर जहाँ-, वहाँवहाँ अँगूठे के - निशान लगते जाओ, नहीं तो वे उन्हें मार कर वहीँ घर के अंदर ही गाड़ देंगे और गाँव के लोगो को इस बारे में कोई सूचना भी नहीं मिलेगी। हरिहर काका के साथ अब उनके भाइयों की मारपीट शुरू हो

गई। जब हरिहर काका अपने भाइयों का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे, तो उन्होंने ज़ोरज़ोर से - चिल्लाकर अपनी मदद के लिए गाँव वालों को आवाज लगाना शुरू कर दिया। तब उनके भाइयों को ध्यान आयाकि उन्हें हरिहर काका का मुँह पहले ही बंद करना चाहिए था। उन्होंने उसी पल हरिहर काका को जमीन पर पटका और उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया। लेकिन तब तक बहुत देर हो गई थी, हरिहर काका की आवाजें बाहर गाँव में पहुँच गई थी। हरिहर काका के परिवार और रिश्तेनाते के - लोग जब तक गाँव वालों कोसमझाते की यह सब उनके परिवार का आपसी मामला है, वे सभी इससे दूर रहें, तब तक महंत जी बड़ी ही दक्षता और तेज़ी से वहाँ पुलिस की जीप के साथ आ गए। पुलिस ने पुरे घर की अच्छे से तलाशी लेना शुरू कर दिया। फिर घर के अंदर से हरिहर काका को इतनी बुरी हालत में हासिल किया गया जितनी बुरी हालत उनकी देवस्थान में भी नहीं हुई थी। हरिहर काका - ने बताया कि उनके भाइयों ने उनके साथ बहुत ही ज्यादा बुरा व्यवहार किया है, जबरदस्ती बहुत से कागजों पर उनके अँगूठे के निशान ले लिए है, उन्हें बहुत ज्यादा मारापीटा है।इस घटना के बाद - हरिहर काका अपने परिवार से एकदम अलग रहने लगे थे। उन्हें उनकी सुरक्षा के लिए चार राइफलधारी पुलिस के जवान मिले थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसके लिए उनके भाइयों और महंत की ओर से काफ़ी प्रयास किए गए थे|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- हरिहर काका कहानी के लेखक कौन हैं ?

A) गुरदयाल सिंह

B) मिथिलेश्वर

C) कोई नहीं

D) दयाल सिंह

Q2- ठाकुरबारी के प्रति गांव वालो के मन में क्या है?

A) अपार श्रद्धा

B) घृणा

C) नफरत

D) प्रेम

Q3- ठाकुरबारी के गांव के लोगो ने मंदिर कैसे बनवाया था?

A)पैसो से

B) ठाकुर के पैसो से

C) चंदा इकठा करके

D) कोई नहीं

Q4- गांव के लोग अपनी सफलता का श्रेय किसको देते हैं?

A)सरपंच को

B) ठाकुरबारी जी को

C) स्वयं को

D) कोई नहीं

Q5- ठाकुरबारी में लोग अपनी श्रद्धा कैसे व्यक्त करते है ?

A)रूपए देकर

B) जेवर

C) सभी

D) अन्न देकर

Q6- ठाकुरबारी के नाम पर कितने खेत हैं ?

A) १० बीघे

B) २० बीघे

C) ३० बीघे

D) २ बीघे

Q7- गांव वालो की अपार श्रद्धा से उनकी किस मनोवृति का पता चलता है ?

A) अंध भक्ति

B) अविश्वास

C) धार्मिक प्रवृति का

D) विश्वास की

Q8- महंत और हरिहर काका के भाई एक ही श्रेणी के क्यों हैं ?

A) दोनों दुर्व्यवहार करते हैं

B) दोनों ने ज़मीन हथियाने का षड्यंत्र किया

C) दोनों

D) कोई नहीं

Q9- महंत ने हरिहर काका की किस परिस्तिथि का लाभ उठाया ?

A) पारिवारिक मजबूरी का

B) गरीबी का

C) पारिवारिक नाराजगी का

D) नाराजगी का

Q10- महंत ने हरिहर काका को किस आधार पर ब्लैकमेल किया ?

A) भावनात्मक आधार पर

B) परिवार के नाम पर

C) धर्म के नाम पर

D) कोई नहीं

*-प्रश्न अभ्यास (महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर)

प्रश्न 1.कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर:कथावाचक और हरिहर काका के बीच घनिष्ठ दोस्तों जैसे प्यार भरा रिश्ता था।

इसका कारण यह था कि ये दोनों एक ही गाँव के रहने वाले थे। लेखक उनके हर सुख-दुख में उनके पास पहुँच जाता था।

हरिहर काका के कोई संतान ने थी। वे लेखक को बचपन से बहुत प्यार करते थे। बड़ा होते-होते यही दुलार दोस्ती में बदल गया।

हरिहर काका अपनी सारी बातें लेखक से बता दिया करते थे|

प्रश्न 2.हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

उत्तर:महंत एवं हरिहर काका के भाई, दोनों की स्वार्थ-लिप्सो, दोनों का अपने प्रति क्रूर दुर्व्यवहार देखकर हरिहर काका को वे एक ही श्रेणी के लगने लगे। दोनों का लक्ष्य एक ही था-हरिहर काका की जमीन हथियाला। इसके लिए दोनों ने ही छल-बल का प्रयोग किया और उनके विश्वास को ठेस पहुँचाई। दोनों में कोई अंतर नहीं था।

प्रश्न 3.ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं, उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?

उत्तर:ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा का भाव है। यह उनकी मनोवृत्ति से पता चलता है, क्योंकि-

लोग पुत्र प्राप्ति, लड़की की शादी अच्छे घर में तय होने, लड़के को नौकरी मिलने आदि को ठाकुर जी की कृपा मानते थे।

वे खुशी के अवसर पर ठाकुर जी पर रुपये, जेवर, अनाज आदि चढ़ाते थे तथा अधिक खुशी होने पर अपनी जमीन का एक भाग ठाकुर जी के नाम लिख देते थे।

वे बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा में राहत पाने के लिए ठाकुर जी से प्रार्थना करते थे।

वे अपनी मनोकामना की पूर्ति हेतु ठाकुर जी से प्रार्थना करते थे|

प्रश्न 4.अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझे इसलिए रखते हैं, क्योंकि जिंदगी में उन्हें जो अनुभव हुए, उन अनुभवों ने उनकी समझ को निखार दिया। परिवार वाले और मठाधीश दोनों ही उनके लिए काल-विकराल बन जाते हैं। इन दोनों ने हरिहर काका से 15 बीघे जमीन हथियाने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाए तथा उनपर बहुत ज़ुल्म और अत्याचार किए। इन सबके बावजूद हरिहर काका ने जीते जी अपनी जमीन किसी के नाम नहीं लिखी, क्योंकि अपनी जमीन इनके नाम करके वे अपना जीवन 'रमेसर की विधवा की तरह नर्क में नहीं झोंकना चाहते थे तथा न ही जीते जी कुत्ते की मौत मरना चाहते थे। ये सभी बातें यही स्पष्ट करती हैं कि अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं।

प्रश्न 5.हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बर्ताव किया?

उत्तरस्हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले लोग ठाकुरबारी के साधु-संत और महंत के पक्ष के लोग थे। हरिहर काका अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम लिखने को तैयार न थे। वे अपने भाइयों के घेरे में रह रहे थे तब काका से बलपूर्वक जमीन-जायदाद की वसीयत करने का एकमात्र यही उपाय नजर आया। ठाकुरबारी में महंत के लोगों ने काका के साथ बुरा बरताव किया। उन्होंने काका के मुँह में कपड़ा ठूंस दिया। उन्होंने अनेक जगह सादे कागजों पर अँगूठा लगवाया और उनके हाथ-पैर बाँधकर एक कमरे में डालकर ताला बंद कर दिया और भाग गए।

प्रश्न 6.हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

उत्तर(हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की राय के रूप में दो वर्ग बन गए थे और दोनों वर्गों की राय भी भिन्न-भिन्न थी। पहले वर्ग का कहना था कि हरिहर काका को अपनी जमीन ठाकुर जी के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उत्तम उनके लिए कुछ न होगा, क्योंकि ऐसा करने से उनकी कीर्ति अचल बनेगी तथा ठाकुरबारी का महत्त्व गाँव की सीमा के बाहर भी फैलेगा। पहले वर्ग की राय इसलिए ऐसी थी, क्योंकि यह वर्ग धार्मिक प्रवृत्ति का था, ठाकुरबारी से जुड़ा था तथा यह वर्ग ठाकुरबारी में प्रसाद के बहाने हलुआ-पूरी का भोग लगाता था। दूसरे वर्ग की राय यह थी कि भाइयों के परिवार भी तो अपने ही होते हैं, इसलिए हरिहर काका को अपनी सारी ज़मीन उनके नाम लिख देनी चाहिए। अन्यथा वे लोग उनके साथ अन्याय करेंगे। दूसरे वर्ग की राय प्रगतिशील विचारों के कारण ऐसी थी।

प्रश्न 7.कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा-"अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

उत्तर:'अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है। लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि काका जिस भयावह स्थिति से गुजर रहे थे उस स्थिति में फँसा हर आदमी यही सोचता है कि इस तरह घुट-घुटकर जीने से तो एक बार मरना

ही अच्छा है। काका भली प्रकार जानते थे कि महंत या भाइयों के नाम ज़मीन कर देने से उनका जीवन वैसे भी नरक बन जाएगा। उन्होंने मौत का भय दिखाने वाले भाइयों को भी जमीन लिखने के बजाय मौत को गले लगाना उचित समझा और वे मरने के लिए तैयार हो गए।

प्रश्न 8.समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर।समाज में रिश्तों की बहुत बड़ी तथा विशेष अहमियत है, क्योंकि संसार को चलाने के लिए रिश्ते-नातों का, संबंधों का बहुत महत्त्व है। रिश्तों के कारण ही बहुत-से पाप-अत्याचार, अनाचारों का शमन हो जाता हैं। वंशपरंपराएँ चलती हैं तथा रिश्तों की डोर मज़बूत होती है। व्यक्ति कई बदनामी के कार्य करने से बच जाता है तथा सीख देने में रिश्तों की अहमियत बहुत बड़ी मदद करती है। लेकिन आज रिश्तों की अहमियत कम होती जा रही है। भौतिक सुखों की होड़ और दौड़, स्वार्थ लिप्सा तथा धर्म की आड़ में फलने-फूलने वाली हिंसावृत्ति ने रिश्तों की अहमियत को औपचारिकता तथा आडंबर का जामा पहना दिया है। आज रिश्तों से ज़्यादा धन-दौलत को अहमियत दी जा रही है।

प्रश्न 9.यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

उत्तर।यदि हमारे समाज में हरिहर काका जैसा व्यक्ति है तो अपने व्यस्ततम समय से कुछ समय निकालकर उसके साथ बातें करेंगे ताकि उसका एकाकीपन दूर हो सके। उसकी आवश्यकता के बारे में पूछेगे तथा यथासंभव उसको पूरा करने का प्रयास करेंगे। इसके अलावा उसके खाने-पीने संबंधी आवश्यकता पूरी करने का प्रयास करेंगे। इसके अलावा खुश रखने का हर संभव प्रयास करेंगे|

प्रश्न 10.हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती, तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर।हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती, तो उनकी ऐसी दयनीय स्थिति इस तरह से कदापि न होती, जैसी उनके भाइयों और ठाकुरबारी के महंत ने की। मीडिया उनकी दयनीय स्थिति को दूरदर्शन पर दिखाकर सरकार और जनता का ध्यान इस ओर खींचता और हरिहर काका की घटना सारे देश की घटना बन जाती, जिससे उनके भाई हरिहर काका की अच्छी तरह से देखभाल करने के लिए बाध्य हो जाते। ठाकुरबारी के महंत सहित अन्य सभी । लोगों का भी पर्दाफाश हो जाता, जिससे हरिहर काका भयमुक्त हो जाते और उनका जीना सरल हो जाता तथा पूरी जनता की सहानुभूति उन्हें मिल जाती।

*दीर्घ उत्तर -

प्रश्न 1 - कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या सम्बन्ध है और इसके क्या कारण है?

उत्तर - हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। वे लेखक को अपने कंधे पर बैठा कर घुमाया करते थे। एक पिता का अपने बच्चों के लिए जितना प्यार होता है, लेखक के अनुसार हरिहर काका का उसके लिए प्यार उससे भी अधिक था। जब लेखक व्यस्क हुआ या थोड़ा समझदार

हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी। उससे पहले हरिहर काका की गाँव में किसी से इतनी गहरी दोस्ती नहीं हुई थी। लेखक कहता है कि जब हरिहर काका उसके पहले दोस्त बने तो उसे ऐसा लगा जैसे हरिहर काका ने भी लेखक से दोस्ती करने के लिए इतनी लम्बी उम्र तक इन्तजार किया हो। हरिहर काका उससे कभी भी कुछ नहीं छुपाते थे, वे उससे सबकुछ खुल कर कह देते थे। इस तरह हम कह सकते हैं कि लेखक और हरिहर काका का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध था।

प्रश्न 2 - हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

उत्तर -कुछ दिनों तक तो हरिहर काका के परिवार वाले हरिहर काका की सभी चीज़ों का अच्छे से ध्यान रखते थे, परन्तु फिर कुछ दिनों बाद हरिहर काका को कोई पूछने वाला नहीं था। हरिहर काका के सामने जो कुछ बच जाता था वही परोसा जाता था। कभी-कभी तो हरिहर काका को बिना तेल-घी के ही रूखा-सूखा खाना खा कर प्रसन्न रहना पड़ता था। अगर कभी हरिहर काका के शरीर की स्थिति या मन की स्थिति ठीक नहीं होती तो हरिहर काका पर मुसीबतों का पहाड़ ही गिर जाता। क्योंकि इतने बड़े परिवार के रहते हुए भी हरिहर काका को कोई पानी भी नहीं पूछता था। बारामदे के कमरे में पड़े हुए हरिहर काका को अगर किसी चीज़ की जरुरत होती तो उन्हें खुद ही उठना पड़ता।

महंत हरिहर काका को समझाता था कि उनके हिस्से में जितने खेत हैं वे उनको भगवान के नाम लिख दें। ऐसा करने से उन्हें सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी। तीनों लोकों में उनकी प्रसिद्धि का ही गुणगान होगा। जब तक इस दुनिया में चाँद-सूरज रहेंगे, तब तक लोग उन्हें याद किया करेंगे। साधु-संत भी उनके पाँव धोएंगें। महंत हरिहर काका से कहता था कि उनके हिस्से में जो पंद्रह बीघे खेत हैं। उसी के कारण उनके भाइयों का परिवार उनसे जुड़ा हुआ है। किसी दिन अगर हरिहर काका यह कह दें कि वे अपने खेत किसी और के नाम लिख रहे हैं तो वे लोग तो उनसे बात करना भी बंद कर देंगें। खून के रिश्ते ख़त्म हो जायेंगे।

असल में हरिहर काका को समझ आ गया था की दोनों ही उनसे उनकी जमीन के लिए अच्छा व्यवहार करते हैं, नहीं तो कोई उन्हें पूछता तक नहीं। इसीलिए हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के लगने लगे थे।

प्रश्न 3 - ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृति का पता चलता है?

उत्तर -गाँव के लोगों को भोला और अंधविश्वासी मनोवृति का माना जाता है क्योंकि गाँव के ज्यादातर लोगों का विश्वास यह बना होता है कि अगर उनकी फसल अच्छी हुई है तो उसे वे अपनी मेहनत नहीं बल्कि भगवान की कृपा मानते हैं। किसी की मुक़दमे में जीत होती है तो उसका श्रेय भी भगवान को दिया जाता है। लड़की की शादी अगर जल्दी तय हो जाती है तो भी माना जाता है कि भगवान से मन्नत माँगने के कारण ऐसा हुआ है। अपनी ख़ुशी से गाँव के लोग भगवान को बहुत कुछ दान में देते हैं, कुछ तो अपने खेत का छोटा-सा भाग भगवान के नाम कर देते हैं। इसी बात का फायदा महंत-

पुजारी और साधु-संत लोग उठाते हैं जो ठाकुरबारी के नाम पर और भगवान को भोग लगाने के नाम पर दिन के दोनों समय हलवा-पूड़ी बनवाते हैं और आराम से पड़े रहते हैं। सारा काम वहाँ आए लोगो से सेवा करने के नाम पर करवाते हैं। लोग ठाकुर बारी को पवित्र, निष्कलंक और ज्ञान का प्रतिक मानते हैं।

⁎-व्याकरण-

‘शब्द , पद ,पदबंध‘

शब्द:-

शब्द दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बने उस समूह को कहते हैं जिसका कोई निर्दिष्ट अर्थ हो, जैसे – पानी

यह शब्द चार वर्णों के मेल से बना है- प्+आ+न्+ई = पानी

पानी शब्द सुनते या देखते ही हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे तरल द्रव्य का चित्र उभरता है जिसे पीकर हम अपनी प्यास बुझाते हैं।

माता –म+आ+त+आ=

शब्द और अर्थ का संबंध:-

शब्द और अर्थ का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध। जिन शब्दों के अर्थ न हो उसे शब्द की श्रेणी में रखा ही नहीं जा सकता है, जैसे- नीपा ये शब्द भी चार वर्णों न्+ई+प्+आ के संयोग से बना है परंतु इसका कोई अर्थ नहीं अर्थात् इसे सार्थक शब्द नहीं कहा जाएगा।

शब्द के अर्थ का बोध

शब्द के अर्थ का बोध हमें दो प्रकार से होता है पहला आत्म-अनुभव और दूसरा पर-अनुभव से।

आत्म-अनुभव – जब हम स्वयं किसी चीज़ का अनुभव करते हैं जैसे –‘चीनी मीठी होती है’ में मीठी शब्द के अर्थ का बोध हमें स्वयं चीनी चखने से हो जाता है। ठीक इसी प्रकार पानी, गर्मी, धूप इत्यादि

पर-अनुभव - अर्थ के बोध का अनेक क्षेत्र ऐसा भी होता है जहाँ हमारी पहुँच नहीं होती और हमें अर्थ बोध के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है जैसे हममें से बहुत से लोगों ने जहर नहीं देखा होगा लेकिन हमने दूसरों से यह सुन रखा है कि इसको खाने से मौत हो जाती है। ठीक इसी प्रकार – आत्मा, ईश्वर, मोक्ष इत्यादि शब्दों के अर्थ बोध के लिए हमें दूसरों के अनुभव की ज़रूरत पड़ती है।

शब्दों के भेद निम्नलिखित आधार पर किए जाते हैं –

उत्पत्ति के आधार पर

बनावट के आधार पर

प्रयोग के आधार पर

अर्थ के आधार पर

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण –

इस आधार पर शब्दों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है –

(क) तत्सम शब्द-जो शब्द अपरिवर्तित रूप में संस्कृत भाषा से लिए गए हैं या जिन्हें संस्कृत के मूल शब्दों से संस्कृत के ही
प्रत्यय लगाकर नवनिर्मित किया गया है, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तत्सम शब्द दो शब्दों से बना है, 'तत्' और 'सम' जिसका अर्थ है उसके अनुसार अर्थात् संस्कृत के अनुसार। तत्सम शब्दों के कुछ उदाहरण-प्रौद्योगिकी, आकाशवाणी, आयुक्त, स्वप्न, कूप, उलूक, चूर्ण, चौर, यथावत, कर्म, कच्छप, कृषक, कोकिल, अक्षि, तैल, तीर्थ, चैत्र, तपस्वी, तृण, त्रयोदश, कन्दुक, उच्च, दश, दीपक, धूलि, नासिका आदि।

(ख) तद्भव शब्द-जो शब्द संस्कृत भाषा से उत्पन्न तो हुए हैं, पर उन्हें ज्यों का त्यों हिंदी में प्रयोग नहीं किया जाता है। इनके रूप में परिवर्तन आ जाता है। इनको तद्भव शब्द कहते हैं।

तद्भव शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है; जैसे – 'तद्' और 'भव'। जिसका अर्थ है-उसी से उत्पन्न। तद्भव शब्दों के कुछ उदाहरण – काजर, सूरज, रतन, परीच्छा, किशन, अँधेरा, अनाड़ी, ईख, कुम्हार, ताँबा, जोति, जीभ, ग्वाल, करतब, कान, साँवला, साँप, सावन, भाप, लोहा, मारग, मक्खी , भीषण, पूरब, पाहन, बहरा, बिस आदि।

(ग) देशज शब्द-वे शब्द जिनका स्रोत संस्कृत नहीं है किंतु वे भारत में ग्राम्य क्षेत्रों अथवा जनजातियों में बोली जाने वाली तथा संस्कृत से भिन्न भाषा परिवारों के हैं। देशज शब्द कहलाते हैं। ये शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में प्रयुक्त होते हैं।

देशज शब्दों के कुछ उदाहरण-कपास, अंगोछा, खिड़की, ठेठ, टाँग, झोला, रोटी, लकड़ी, लागू, खटिया, डिबिया, तेंतुआ, थैला, पड़ोसी, खोट, पगिया, घरौंदा, चूड़ी, जूता, दाल, ठेस, ठक-ठक, झाड़ आदि।

घ) आगत या विदेशी शब्द-विदेशी भाषाओं से संपर्क के कारण अनेक शब्द हिंदी में प्रयोग होने लगे हैं। ये शब्द ही आगत या विदेशी शब्द कहलाते हैं। हिंदी में प्रयुक्त विदेशी शब्द निम्नलिखित हैं –

अरबी शब्द-बर्फ, बगीचा, कानून, काज़ी, ऐब, कसूर, किताब, करामात, कत्ल, कलई, रिश्वत, मक्कार, मीनार, फ़कीर, नज़र, नखरा, तहसीलदार, अदालत, अमीर, बाज़ार, बेगम, जवाहर, दगा, गरीब, खुफिया, वसीयत, बहमी, फ़ौज, दरवाज़ा, कदम आदि।

फारसी शब्द-नालायकी, शादी, शेर, चापलूस, चादर, जिंदा, ज़बान, जिगर, दीवार, गरदन, चमन, चरबी, खार, गरीब, खत, खान, कारतूस, आतिशी, अनार, कम, कफ़, कमर, आफ़त, गरीब, अब्र, अबरी, गुनाह, सब्जी, चाकू, सख्त आदि।

अंग्रेज़ी शब्द-पार्क, राशन, अफ़सर, अंकल, अंडर, सेक्रेटरी, बटन, कंप्यूटर, ओवरकोट, कूपन, गैस, कार्ड, चार्जर, चॉक, चॉकलेट, चिमनी, वायल सरकस, हरीकेन, हाइड्रोजन, स्टूल, स्लेट, स्टेशन, लाटरी, लेबल, सिंगल, सूट, मील, मोटर, मेम्बर, रिकॉर्ड, मेल, रेडियो, प्लेटफार्म, बाम, बैरक, डायरी, ट्रक, ड्राइवर आदि।

पुर्तगाली शब्द-मिस्त्री, साबुन, बालटी, फालतू, आलू, आलपीन, अचार, काजू, आलमारी, कमीज़, कॉपी, गमला, चाबी, गोदाम, तौलिया, तिजोरी, पलटन, पीपा, पादरी, फीता, गमला, गोभी, प्याला आदि।

चीनी शब्द-चाय, लीची, पटाखा व तूफ़ान आदि।

यूनानी शब्द-टेलीफ़ोन, टेलीग्राम, डेल्टा व ऐटम आदि।

जापानी शब्द-रिक्शा।

फ्रांसीसी शब्द-कॉर्टून, इंजन, इंजीनियर, बिगुल व पुलिस आदि।

(2. बनावट या रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण –

बनावट की भिन्नता के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में बाँटा गया है।

(क) रूढ़ शब्द-जिन शब्दों के सार्थक खंड न किए जा सकें तथा जो शब्द लंबे समय से किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयोग हो रहे हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

रूढ़ शब्द के कुछ उदाहरण-ऊपर (ऊ + प + र), नीचे (नी + चे), पैर (पै + र), कच्चा (क + च् + चा), कमल (क + म + ल), फूल (फू + ल), वृक्ष (वृ + क्ष), रथ (र + थ), पत्ता (प + त् + ता) आदि।

(ख) यौगिक शब्द-दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों द्वारा निर्मित शब्दों को यौगिक शब्द कहते हैं। यौगिक शब्दों के कुछ

उदाहरण –

रसोईघर = रसोई + घर

अनजान = अन + जान

अभिमानी = अभि + मानी

पाठशाला = पाठ + शाला

रेलगाड़ी = रेल + गाड़ी

ईमानदार = ईमान + दार

हिमालय = हिम + आलय

हमसफ़र = हम + सफ़र

आज्ञार्थ = आज्ञा + अर्थ

वाचनालयाध्यक्ष = वाचन + आलय + अध्यक्ष

(ग) योगरूढ़ शब्द-जो यौगिक शब्द किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।
योगरूढ़ शब्दों के उदाहरण –
चिड़ियाघर = चिड़िया + घर = शाब्दिक अर्थ = पक्षियों का घर।
विशेष अर्थ = सभी प्रकार के पशु-पक्षियों के रखे जाने का स्थान ।
पंकज = पंक + ज = शाब्दिक अर्थ = कीचड़ में उत्पन्न।
विशेष अर्थ = कमल।
श्वेतांबरा = श्वेत + अंबर + आ = शाब्दिक अर्थ = सफ़ेद वस्त्रों वाली।
विशेष अर्थ = सरस्वती।
नीलकंठ = नील + कंठ शाब्दिक अर्थ = नीला कंठ।
विशेष अर्थ = शिव जी।
दशानन = दश + आनन = शाब्दिक अर्थ = दस मुँह वाला।
विशेष अर्थ = रावण।
लंबोदर = लंबा + उदर = शाब्दिक अर्थ = लंबे उदर वाला।
विशेष अर्थ = गणेश।
3. प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण –
प्रयोग के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं –
(क) सामान्य शब्द-जिन शब्दों का प्रयोग दिन-प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार में होता है, उन्हें सामान्य शब्द कहते हैं। उदाहरण-रोटी, पुस्तक, कलम, साइकिल, शिशु, मेज़, लड़का आदि।
(ख) अर्ध तकनीकी शब्द-जो शब्द दिन-प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार में भी प्रयोग में लाए जाते हैं तथा किसी विशेष उद्देश्य के लिए ही इनका प्रयोग किया जाता है, उन्हें अर्ध तकनीकी शब्द कहते हैं।
उदाहरण – दावा, आदेश, रस।
(ग) तकनीकी शब्द-किसी क्षेत्र विशेष में प्रयोग की जाने वाली शब्दावली के शब्दों को तकनीकी शब्द कहते हैं।
उदाहरण – विधि (कानून) के क्षेत्र में प्रयोग किए जाने वाले शब्द – विधि, विधेयक, संविधान, प्रविधि आदि।
इसी प्रकार–प्रशासन, बैंक, चिकित्सा, विज्ञान, अर्थशास्त्र के क्षेत्रों से संबंधित शब्द हैं-महानिदेशक, आयोग, समिति, कार्यवृत्त, सीमा शुल्क, सूचकांक, पदोन्नति, शेयर, कार्यशाला, आरक्षण आदि।
साहित्य में भी ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है – संधि, समास, उपसर्ग, रूपक, दोहा, रस आदि।
4. अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण
अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद किए गए हैं –

(क) निरर्थक शब्द-जो शब्द अर्थहीन होते हैं, निरर्थक शब्द कहलाते हैं। ये शब्द सार्थक शब्दों के पीछे लग उनका अर्थ-विस्तार करते हैं।

उदाहरण-

लड़का पढ़ने में ठीक-ठाक है।

घर में फुटबॉल मत खेलो, कहीं कुछ टूट-फूट गया तो मार पड़ेगी।

(ख) सार्थक शब्द-जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं।

उदाहरण – कोयल, पशु, विचित्र, कर्तव्य, संसार आदि।

सार्थक शब्द अनेक प्रकार के है –

(i) एकार्थी शब्द-जिन शब्दों का केवल एक निश्चित अर्थ होता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं।

उदाहरण-हाथी, ईश्वर, पति, पुस्तक, शत्रु, मित्र, कमरा आदि।

(ii) अनेकार्थी शब्द-जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

उदाहरण- अर्थ – मतलब, प्रयोजन, धन।

कर – हाथ, टैक्स, किरण।

अंबर – आकाश, कपड़ा, सुगंधित पदार्थ।

काल – समय, अवधि, मौसम।

आम – सामान्य, एक फल, मामूली।

(iii) समानार्थी या पर्यायवाची शब्द-जो शब्द एक समान (लगभग एक सा ही) अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर्याय का अर्थ है दूसरा अर्थात् उसी प्रयोजन या वस्तु के लिए दूसरा शब्द। इनका अर्थ लगभग एक समान होता है पर पूर्ण रूप से समान नहीं।

उदाहरण – कमल – शतदल, वारिज, जलज, नीरज, पंकज, अंबुज।

पेड़ – विटप, पादप, वृक्ष, द्रुम, रूख, तरु।

आकाश – नभ, गगन, आसमान, अंबर।

पक्षी – खग, विहग, विहंगम, द्विज, खेचर।

धरती – भू, भूमि, धरा, वसुंधरा।

अँधेरा – अंधकार, तम, तिमिर, हवांत।

(iv) विपरीतार्थक शब्द-हिंदी भाषा के प्रचलित शब्दों के विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

उदाहरण – कटु – मधुर

आदि – अंत

उपकार – अपकार

हार – जीत

अनुज – अग्रज

आदर – निरादर, अनादर

आय – व्यय

चतुर – मूर्ख

पद

पद- शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होकर व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ जाते हैं तब वे पद कहलाते हैं और ये पद वाक्य के आंशिक भाव को प्रकट करते हैं।

यहाँ आपके लिए यह जान लेना आवश्यक है कि व्याकरणिक इकाइयाँ होती क्या है?

संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक, क्रिया,काल आदि व्याकरणिक बिन्दुओं को ही व्याकरणिक इकाइयाँ कहते हैं। माँ कब से खाना बना रहीं हैं|

माँ –एक वचन,स्त्रीलिंग,जातिवाचक

खाना -बहुवचन, जातिवाचक

कब से –काल

बना रहीं हैं- क्रिया ,वर्तमानकाल

उदाहरण के लिए एक शब्द है- 'राजा' अब हम इसे वाक्य में प्रयोग करेंगे।

राजा हरिश्चंद्र बहुत बड़े दानवीर थे।

यहाँ 'राजा' शब्द न रहकर पद में बदल चुका है क्योंकि एक तो यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह हरिश्चंद्र की विशेषता बता रहा है कि वे एक राजा थे।

दूसरा वाक्य

भारत के लगभग सभी राजाओं ने राजकुमारी संयुक्ता के स्वयंवर में भाग लिया।

यहाँ 'राजाओं' शब्द भी पद में बदल चुका है क्योंकि यहाँ भी यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह भारत के सभी राजाओं के बारे में बता रहा है।

इसे और स्पष्ट करने के लिए हमें यह जान लेना ज़रूरी है कि यह पद कौन-कौन से व्याकरणिक इकाइयों से अनुशासित हुआ है-

राजाओं –संज्ञा-जातिवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, भाग लिया क्रिया का कर्ता

इस प्रक्रिया को पद परिचय कहते हैं।

पदबंध

पद से बड़ी इकाई को पदबंध कहते हैं या एकाधिक पद को पदबंध कहते हैं।

पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं –

संज्ञा पदबंध

सर्वनाम पदबंध

विशेषण पदबंध

क्रिया पदबंध

क्रियाविशेषण पदबंध

इन पाँचों पदबंधों पर हम एक एक करके विचार करेंगे

संज्ञा पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में संज्ञा का काम करे उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

प्रश्न - कौन देशभक्त हैं?

उत्तर - इज़राइल के प्रत्येक नागरिक

आज बाज़ार मे सस्ते दामों में आम मिल रहे थे।

प्रश्न - सस्ते दामों में क्या मिल रहा था?

उत्तर – आम

सर्वनाम पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में सर्वनाम का काम करे उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

काम करते-करते वह थक गया।

प्रश्न - काम करते-करते कौन थक गया?

उत्तर –वह

दूध में कुछ गिर गया है।

प्रश्न - दूध में क्या गिर गया है?

उत्तर – कुछ ।

विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में विशेषण काम करे उसे विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कैसे लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

प्रश्न - इस दुनिया में कैसे लोग बहुत कम हैं?

उत्तर – ईमानदार

मेहनत से जी चुराने वाले सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न – कैसे लोग सफल नहीं होते हैं?

उत्तर – मेहनत से जी चुराने वाले

क्रिया पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया काम करे उसे क्रिया पदबंध कहते हैं। इसमें किसी कार्य के होने का बोध होता है जैसे-

बहुत देर हो गई है।

बच्चे परीक्षा दे रहे हैं।

क्रिया विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया विशेषण काम करे उसे क्रिया विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कि इसमें क्रिया की विशेषता का बोध होता है इसमें क्रिया के साथ कितना, कहाँ, कैसे और कब आदि लगाकर प्रश्न बनाए जाते हैं, जैसे-

बच्चा बहुत दूर चलते-चलते थक गया।

प्रश्न - बच्चा कितना चलते-चलते थक गया?

उत्तर - बहुत दूर

दो लड़के खिड़की से बाहर देख रहे हैं।

प्रश्न - दो लड़के कहाँ देख रहे हैं?

उत्तर - खिड़की से बाहर

गाडी बहुत तेज़ चल रही है।

प्रश्न - गाड़ी कैसे चल रही है?

उत्तर - बहुत तेज़

राजू के बड़े भाई परसों दिल्ली चले गए।

प्रश्न - राजू के बड़े भाई कब दिल्ली चले गए?

उत्तर - राजू के बड़े भाई परसों

इसके अतिरिक्त रेखांकित पदबंधों के अंतिम शब्द के आधार पर भी हम पदबंध का निर्धारण कर सकते हैं, जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

काम करते-करते वह थक गया।

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

बहुत देर हो गई है।

दो लडके खिडकी से बाहर देख रहे हैं।

मुहावरे-

.प्राण सूखना-डर लगना।

आतंकवादियों को देखकर गाँव वालों के प्राण सूख गए।

2. हँसी-खेल होना-छोटी-मोटी बात।

जंगल में अकेले जाना कोई हँसी-खेल नहीं होता

3. आँखें फोड़ना-बड़े ध्यान से पढ़ना।

कक्षा में प्रथम आने के लिए निखिल आँखें फोड़कर

पढ़ाई करता है।

4. गाढ़ी कमाई–मेहनत की कमाई।

तुम तो अपनी गाढ़ी कमाई जुएँ में उड़ा रहे हो।

5. ज़िगर के टुकड़े-टुकड़े होना-दिल पर भारी आघात लगना।

बेटे की मृत्यु की खबर सुनकर माता-पिता के जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

6. ईंट का जवाब पत्थर से देना-दुष्ट से दुष्टता करना।

युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

7. ईंट से ईंट बजाना-तहस-नहस कर देना।

भारतीयों ने आतंकवादियों की ईंट से ईंट बजा दी।

8. उल्लू बनाना-मूर्ख बनाना।

पाँच रुपये का सामान दस रुपये में देकर दुकानदार ने तुम्हें उल्लू बना दिया।

9. उन्नीस-बीस होना-थोड़ा-बहुत होना।

दोनों कपड़ों में उन्नीस-बीस का अंतर है।

10. उँगली उठाना-दोष निकालना।

बात-बात पर उँगली उठाना आजकल की पत्नियों का पेशा-सा बन गया है।

लेखन-

*-अनुच्छेद लेखन-

१-ग्लोबल वार्मिंग-मनुष्यता के लिए खतरा-

ग्लोबल वार्मिंग क्या है ?

ग्लोबल वार्मिंग के कारण

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

समस्या का समाधान

गत एक दशक में जिस समस्या ने मनुष्य का ध्यान अपनी ओर खींचा है, वह है-ग्लोबल वार्मिंग। ग्लोबल वार्मिंग का सीधा-सा अर्थ है है-धरती के तापमान में निरंतर वृद्धि। यद्यपि यह समस्या विकसित देशों के कारण बढ़ी है परंतु इसका नुकसान सारी धरती को भुगतना पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारणों के मूल हैं-मनुष्य की बढ़ती आवश्यकताएँ और उसकी स्वार्थवृत्ति। मनुष्य प्रगति की अंधाधुंध दौड़ में शामिल होकर पर्यावरण को अंधाधुंध क्षति पहुँचा रहा है। कल-कारखानों की स्थापना, नई बस्तियों को बसाने, सड़कों को चौड़ा करने के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की गई है|इससे पर्यावरण को दोतरफा नुकसान हुआ है तो इन गैसों को अपनाने वाले पेड़-पौधों की कमी से आक्सीजन, वर्षा की मात्रा और हरियाली में कमी आई है। इस कारण वैश्विक तापमान बढ़ता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण एक ओर धरती की सुरक्षा कवच ओजोन में छेद हुआ है तो दूसरी ओर पर्यावरण असंतुलित हुआ है। असमय वर्षा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सरदी-गरमी की ऋतुओं में भारी बदलाव आना ग्लोबल वार्मिंग का ही प्रभाव है।इससे ध्रुवों पर जमी बरफ़ पिघलने का खतरा उत्पन्न हो गया है जिससे एक दिन प्राणियों के विनाश का खतरा होगा, अधिकाधिक पौधे लगाकर उनकी देख-भाल करनी चाहिए तथा प्रकृति से छेड़छाड़ बंद कर देना चाहिए। इसके अलावा जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण करना होगा। आइए इसे आज से शुरू कर देते हैं, क्योंकि कल तक तो बड़ी देर हो जाएगी|

२-बच्चों की शिक्षा में मातापिता की भूमिका--

शिक्षा और माता-पिता
शिक्षा की महत्ता
उत्तरदायित्व

शिक्षाविहीन नर पशु समान।महँगाई उस समस्या का नाम है, जो कभी थमने का नाम नहीं लेती है। मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के साथ ही गरीब वर्ग को जिस समस्या ने सबसे ज्यादा त्रस्त किया है वह महँगाई ही है। समय बीतने के साथ ही वस्तुओं का मूल्य निरंतर बढ़ते जाना महँगाई कहलाता है। इसके कारण वस्तुएँ आम आदमी की क्रयशक्ति से बाहर होती जाती हैं और ऐसा व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ तक पूरा नहीं कर पाता है।ऐसी स्थिति में कई बार व्यक्ति को भूखे पेट सोना पड़ता है।महँगाई के कारणों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि इसे बढ़ाने में मानवीय और प्राकृतिक दोनों ही कारण जिम्मेदार हैं। मानवीय कारणों में लोगों की स्वार्थवृत्ति, लालच अधिकाधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति, जमाखोरी और असंतोष की भावना है। इसके अलावा त्याग जैसे मानवीय मूल्यों की कमी भी इसे बढ़ाने में आग में

घी का काम करती है।सूखा, बाढ़ असमय वर्षा, आँधी, तूफ़ान, ओलावृष्टि के कारण जब फ़सलें खराब होती हैं तो उसका असर उत्पादन पर पड़ता है। इससे एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति पैदा होती है और महँगाई बढ़ती है।महँगाई रोकने के लिए लोगों में मानवीय मूल्यों का उदय होना आवश्यक है ताकि वे अपनी आवश्यकतानुसार ही वस्तुएँ खरीदें। इसे रोकने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर लगाम लगाना आवश्यक है।

पत्र-लेखन –

*-पत्र-लेखन

प्रश्नः 1.

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए जिसमें अपने परिवार की खराब आर्थिक स्थिति का उल्लेख करते हुए आर्थिक सहायता पाने का निवेदन किया गया हो।

उत्तरः

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

नव सृजन पब्लिक

स्कूल सोहना रोड, गुड़गाँव

विषय-आर्थिक सहायता पाने के संबंध में

मान्यवर

विनम्र निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी जिस फैक्ट्री में कामकरते थे, वह सीलिंग के कारण बंद हो गई है जिससे वे बेरोज़गार हो गए हैं। इस स्थिति में वे मेरा मासिक शुल्क, छात्रावास शुल्क, सरदी की ड्रेस आदि दिलवाने में असमर्थ हैं। मैं अपनी कक्षा में गतवर्ष प्रथम आया था। इसके अलावा मैं विद्यालयी क्रिकेट टीम का कप्तान भी हूँ।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे विद्यालय से आर्थिक सहायता प्रदान करने की कृपा करें ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद,

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

विकास कुमार

दसवीं-अनुक्रमांक-12

10 अक्टूबर, 20XX

प्रश्नः 2.विद्यालय की प्रयोगशाला में प्रयोग करते हुए आपसे कुछ सामान टूट गया है, जिसके कारण विज्ञान शिक्षिका ने आप पर एक हज़ार रुपये का जुर्माना कर दिया है। इसे माफ़ कराने का निवेदन करते हुए प्रार्थना पत्र लिखिए।

उत्तरः

सेवा में

नवांकुर पब्लिक स्कूल

योग संस्थान रोड

रोहतक, हरियाणा

विषय-जुर्माना माफ़ करने के संबंध में

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। कल तीसरे पीरियड में प्रयोगशाला में प्रयोग करते समय नाइट्रिक एसिड की बोतल मेरे हाथ से छूटकर गिर गई, जिससे बोतल टूट गई और फ़र्श पर एसिड बिखर गया। यद्यपि विज्ञान शिक्षिका से मैं यह कहता रह गया कि जान-बूझकर मैंने ऐसा नहीं किया है, फिर भी उन्होंने मुझे दोषी मानते हुए एक हज़ार रुपये का जुर्माना कर दिया है। श्रीमान जी, मेरे पिता जी चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं, जो यह जुर्माना भरने में असमर्थ हैं।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए जुर्माना माफ़ करने की कृपा करें। भविष्य में मैं ऐसी गलती नहीं करूँगा।

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

मयंक मौर्य

दसवीं ‘ब’, अनुक्रमांक-28

28 जनवरी, 20XX

३- आप दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली मानसी शर्मा है। आपकी बड़ी बहन का विवाह पड़ने के कारण आप विद्यालय नहीं जा सकेंगी। इस संबंध में चार दिन के अवकाश हेतु अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या को प्रार्थना पत्र लिखिए।

उत्तरः

सेवा में

प्रधानाचार्या महोदया

विकास भारती पब्लिक स्कूल

सेक्टर-28, रोहिणी
दिल्ली
विषय-चार दिन के अवकाश के संबंध में

महोदया

विनम्र निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरी बड़ी बहन का विवाह आगामी 14 फरवरी, 20XX को होना तय हुआ है। विवाहोत्सव के कारण घर में मेहमानों का आना-जाना लगा हुआ है। इससे घर में काम-काज बढ़ गया है। मुझे भी घर के कार्यों में माँ का हाथ बँटाना पड़ रहा है। इस कारण मैं 13 फरवरी से 16 फरवरी, 20XX तक विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। आपसे प्रार्थना है कि मुझे 13 से 16 फरवरी, 20XX तक अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शिष्य
मयंक मौर्य
दसवीं 'ब', अनुक्रमांक-28
28 जनवरी, 20XX